भारतीय ज्योतिषीय भाषा का आधार संस्कृत

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अंततः ज्योतिषीय भाषा एक ऐसा सूक्ष्म सेतु है जो अनंत आकाश में घूमते ग्रहों की अस्पष्ट गूंज को मनुष्य के हृदय की धड़कन से जोड़ देता है. यह भाषा भविष्य नहीं बनाती, पर मनुष्य को भविष्य का सामना करने योग्य बनाती है. यह भाग्य नहीं बदलती, पर दृष्टि अवश्य बदल देती है. यही दृष्टि आगे चलकर व्यक्ति के जीवन का मार्गदर्शन बनती है. शब्दों की इसी परिवर्तनकारी शक्ति के कारण ज्योतिष केवल विज्ञान नहीं, बल्कि मनुष्य और ब्रह्मांड के मध्य संवाद का आध्यात्मिक पुल है—एक ऐसा पुल जो तब तक जीवित रहता है जब तक मनुष्य प्रश्न पूछता है और आकाश में तारे चमकते हैं.

ज्योतिष केवल ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति का गणितीय विश्लेषण भर नहीं, बल्कि मानव जीवन की संवेदनात्मक और सांस्कृतिक यात्रा का आध्यात्मिक सहयात्री है. इस सहयात्रा में शब्द सबसे विश्वसनीय पुल हैं—ऐसे पुल जो आकाशीय गतियों की अमूर्त भाषा को मानव मन की अनुभूतियों, आशंकाओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं में रूपांतरित करते हैं. इसलिए ज्योतिषियों की भाषा केवल अन्वय, संकेत या व्याख्या का माध्यम नहीं रहती, बल्कि वह एक जीवंत अनुष्ठान की तरह मनुष्य के भीतर विश्वास, स्थिरता, साहस और समाधान का संचार करती है. ज्योतिषीय संवाद का प्रत्येक शब्द एक अर्थ-विश्व रचता है, जिसमें गणित, मिथक, मनोविज्ञान, दर्शन, संस्कृति और आध्यात्मिकता एक साथ गुँधकर चलते हैं; इसलिए ज्योतिषी की भाषा वस्तुतः ज्ञान का जीवंत रूप है, न कि केवल व्याकरणिक वाक्य.

भारतीय ज्योतिषीय भाषा का आधार संस्कृत है—एक ऐसी भाषा जिसे परंपरा ने देववाणी कहा है. जब कोई ज्योतिषी राशि, नक्षत्र, दशा, अंतर्दशा, गोचर, योग, दोष, शुभ और अशुभ जैसे शब्दों का प्रयोग करता है, तो वह केवल तकनीकी शब्द नहीं बोल रहा होता, बल्कि वह हजारों वर्षों की सांस्कृतिक स्मृति को जीवित कर रहा होता है. दशा केवल एक कालखंड नहीं, बल्कि कर्म के उदय-अनुदय का आध्यात्मिक सिद्धांत है. राशि केवल बारह विभाजनों का नाम नहीं, बल्कि व्यक्ति के स्वभाव, वृत्ति और मनोभूमि का प्रतीकात्मक स्वर है. नक्षत्र तारा-मंडल नहीं, बल्कि देव-ऊर्जा का निवास-स्थान माना जाता है. इस तरह भारतीय ज्योतिष के शब्द अपने भीतर गणित से अधिक आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक भार लिये चलते हैं.

जब एक भारतीय ज्योतिषी कहता है कि शनि आपकी कर्म-परीक्षा ले रहे हैं, तो यह वाक्य व्यक्ति को भयभीत करने के लिए नहीं बल्कि उसके भीतर धैर्य, अनुशासन और सहनशीलता की शक्ति भरने के लिए कहा जाता है. जब वह कहता है कि बृहस्पति का आशीर्वाद आपके जीवन में विस्तार और कल्याण लाएगा, तो यह केवल ग्रह की स्थिति का वर्णन नहीं, बल्कि मनोबल, उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा का संचार है. यहाँ शब्द मनुष्य की मानसिक प्रकृति में एक विशेष प्रकार की अर्थ-उपस्थिति उत्पन्न करते हैं. यह उपस्थिति ही विश्वास का आधार बनती है.

पश्चिमी ज्योतिष में शब्दावली का स्वर मनोवैज्ञानिक है. वे ग्रहों को आर्कटाइप के रूप में प्रस्तुत करते हैं. उदाहरणार्थ, शनि अंदर छिपे शिक्षक, प्लूटो परिवर्तन और पुनर्जन्म का दूत, नेपच्यून कल्पना, रहस्य और अंतर्ज्ञान का समुद्र, तथा मंगल साहस और संघर्ष का प्रतीक कहा जाता है. भाषा प्रेरक और आत्म-खोज की ओर उन्मुख होती है. यहाँ ज्योतिषी यह कहते हैं कि यह गोचर आपको अपने भीतर के सत्य से सामना कराएगा, या यह समय आपके आत्मिक उद्देश्य को उजागर करेगा. इस प्रकार की भाषा व्यक्ति को स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता की ओर प्रेरित करती है.

भारतीय और पश्चिमी ज्योतिष दोनों ही प्रतीक और रूपक का व्यापक प्रयोग करते हैं. रूपकों की यह शक्ति अमूर्त को मूर्त, असंग्रहनीय को संग्रहणीय, और अज्ञेय को ज्ञेय बना देती है. उदाहरणतः भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा को मन का स्वामी, सूर्य को आत्मा का प्रतिनिधि, मंगल को बल और तेज, तथा शुक्र को सौंदर्य और प्रेम कहा जाता है. इन रूपकों से ग्रह केवल खगोलीय पिंड नहीं रहते, बल्कि मानव जीवन के सक्रिय पात्र बन जाते हैं.

ज्योतिषीय संवाद में शब्दों का उपयोग अत्यंत सावधानी और करुणा के साथ किया जाना आवश्यक है. क्योंकि ज्यादातर व्यक्ति किसी आंतरिक संघर्ष, निराशा, बाधा, भय या खोज की स्थिति में ज्योतिषी के पास पहुँचते हैं. ऐसे समय में शब्दों का चयन निर्णायक हो जाता है. एक ही ग्रह स्थिति को दो तरह से कहा जा सकता है—पहला, भयभीत कर देने वाला; दूसरा, आश्वस्त करने वाला. उदाहरण के लिए, यह गोचर आपके जीवन में बाधाएँ लाएगा और यह समय आपको आत्मबल और स्पष्टता प्रदान करेगा—दोनों वाक्य ज्योतिषीय तथ्य एक ही व्यक्त करते हैं, किंतु भाषा का प्रभाव दो बिल्कुल अलग मानसिक स्थितियाँ उत्पन्न करता है. यही कारण है कि फलदीपिका, सारावली और बृहत् पाराशर होरा शास्त्र सभी ज्योतिषी को संयमित वाणी, सत्यवादी भाषा, कोमलता, करुणा, और भय-मुक्त संवाद का उपदेश देते हैं.

इतिहास में आदर्श ज्योतिषियों को ऋषि-स्वभाव का कहा गया है—जो ज्ञान देने के साथ मानसिक-सांत्वना भी देते हैं. उनकी भाषा न भविष्य का डर पैदा करती है और न ही अति उत्साह. वह संतुलित होती है—न तु भीषणम् न च लाघवं. इसलिए ज्योतिषी की भाषा वास्तव में एक आचार-सिद्धांत है, केवल भाषा नहीं.

डिजिटल युग में ज्योतिष की भाषा का व्यापक विस्तार हुआ है. सोशल मीडिया पर ग्रहों की चर्चा मेम्स, कैप्शंस और एक लाइनर में होने लगी है. यहाँ भाषा में सरलता, गति, मनोरंजन और दृश्य-रूप का महत्व बढ़ा है. परंतु इस सरलता के बीच यह चुनौती भी उत्पन्न होती है कि पारंपरिक गहराई क्षीण न हो जाए. आधुनिक ज्योतिषी आज भाषा के दो छोरों को जोड़ते हैं—एक ओर गंभीर, शास्त्रीय, संस्कृत आधारित व्याख्या; दूसरी ओर हल्की, आधुनिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल शैली. यह द्वंद्व स्वयं में आधुनिक ज्योतिष की पहचान बन चुका है.

ज्योतिषी जब किसी व्यक्ति को उसकी कुंडली समझाते हैं, तब केवल तथ्य नहीं बताते, बल्कि उस व्यक्ति की भावनाओं, उसकी आशाओं और उसके मानसिक सहारे को भी समझते हैं. भाषा का उपयोग केवल क्या होगा बताने के लिए नहीं, बल्कि आप इस परिस्थिति को कैसे देखें प्रेरित करने के लिए भी किया जाता है. उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति जीवन में समस्या से जूझ रहा हो, तो ज्योतिषी के शब्द—यह आपका संघर्ष नहीं, यह आपका निर्माण-काल है—उस व्यक्ति की संपूर्ण अनुभूति बदल दे सकते हैं.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 07 से 13 दिसम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर
व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य वृश्चिक राशि में, मंगल वृश्चिक राशि में ता. 7 को 8.0 रात से धनु राशि, बुध वृश्चिक राशि में, वक्री गुरू कर्क राशि में, शुक्र वृश्चिक राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मिथुन कर्क सिंह और कन्या राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- इस सप्ताह ता. 7 को धनुषे मंगल के प्रभाव से वायदा एवं हाजर के व्यापारी तेजी का लाभ लेंगे. रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग, चना, चावल आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा आदि धातु एवं शेयर बाजार में तेजी आयेगी. रूई, सूत, कपास, में पहले मंदी होकर बाद में तेजी रहेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

सोमवार 08 दिसम्बर को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत
शुक्रवार 12 दिसम्बर को	रूकमणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध

मेष

जिद में आकर गलत फैसला लेने से बचें, उच्च अध्ययन में सफलता मिलेगी, जिस योजना को लेकर काफी समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता का योग है. नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते हैं, उन्नति की संभावना है, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी.

वृषभ

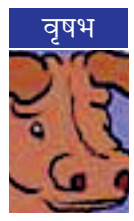

भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से बनेगा, अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं, वे भी आपकी काबलियत की तारीफ करेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.

मिथुन

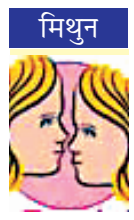

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

कर्क

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. कारोबारी यात्रा हो सकती है.

सिंह

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

कन्या

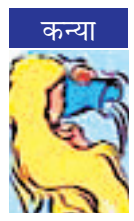

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

तुला

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यों में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

वृश्चिक

अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी, पुरानी गलती को सुधारकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करेंगे, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

धनु

अपने आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानबाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा, अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

मकर

परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

कुम्भ

कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आगे आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यो को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि बढ़ेगी.

मीन

आपको अपनी अभिरूचियों व खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा, आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार अपने कार्य बनाते चले जायेंगे, भाग्य भी आपकी मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास में वृद्धि होगी, कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की ऊँचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे.

धन के सुचारु प्रवाह के लिए तिजोरी की सही दिशा

घर में धन की स्थिरता, सेविंग की क्षमता और आर्थिक उतार-चढ़ाव पर वास्तु शास्त्र का असर होने की मान्यता एक बार फिर चर्चा में है, खासकर तब जब कई परिवार यह दावा कर रहे हैं कि तिजोरी या लॉकर की गलत दिशा उनके खर्च बढ़ा देती है और सही दिशा उन्हें आर्थिक संतुलन देती है. वास्तु के अनुसार, घर में तिजोरी की सही दिशा सिर्फ फर्नीचर प्लेसमेंट नहीं बल्कि एक ऊर्जा विज्ञान का हिस्सा है, जिसके मुताबिक उत्तर दिशा को धन के देवता कुबेर की दिशा कहा गया है और यह दिशा अवसरों, आय-स्रोतों तथा आर्थिक वृद्धि की प्रतीक मानी जाती है.

दिलचस्प बात यह है कि वास्तु मानता है कि हालांकि उत्तर दिशा धन के आगमन की दिशा है, लेकिन धन को स्थायी और सुरक्षित रखने के लिए तिजोरी को दक्षिण दिशा में रखकर उसका मुंह उत्तर की ओर खोलना अधिक शुभ माना जाता है. यदि किसी कारण से यह संभव न हो, तो दूसरा विकल्प तिजोरी का मुंह पूर्व दिशा की ओर खोलना बताया गया है. वहीं पश्चिम दिशा को तीसरा विकल्प माना गया है, लेकिन ऐसे में उत्तर दिशा को ऊर्जिमान बनाना अनिवार्य बताया जाता है ताकि धन का प्रवाह अवरुद्ध न हो. वास्तु विशेषज्ञों का कहना है कि गलत दिशा में रखी तिजोरी के कई संकेत घर में आसानी से दिखने लगते हैं—जैसे पैसा आते ही फिजूलखर्ची में खत्म हो जाना, बचत न होना, अचानक मेडिकल खर्च बढ़ जाना, या बिना जरूरत खरीदारी करना. कई लोग यह भी बताते हैं कि गलत दिशा में तिजोरी होने पर घर में अनावश्यक बहसें, तनाव या अनिश्चितता भी बढ़ जाती है. इसी वजह से वास्तु में तिजोरी की दिशा को सिर्फ धन से नहीं बल्कि मानसिक स्थिरता और पारिवारिक वातावरण से भी जोड़ा गया है.

उत्तर दिशा को ऊर्जिमान बनाने की परंपरा में हाल के वर्षों में क्रिस्टल, जल तत्व और नीले-हरे रंगों का उपयोग काफी पॉपुलर हो गया है. वास्तु के अनुसार, उत्तर दिशा जल तत्व की दिशा है और यह प्रवाह, अवसर और निरंतरता का प्रतीक है. इसी सिद्धांत के आधार पर पानी के छोटे फव्वारे, क्रिस्टल बॉल, ग्लास पिरामिड, ब्लू-ग्रीन डेकोरेशन और सी-पेपर लाइट का उपयोग काफी बढ़ गया है. कई लोग उत्तर दिशा में कुबेर यंत्र, क्रिस्टल ट्री, ब्लू क्वार्ट्ज, एक्वामरीन स्टोन, कांच का वाटर बाउल या छोटा फाउंटेन भी रखते हैं, ताकि ऊर्जा संचरण और धन का प्रवाह बेहतर हो सके.

वास्तु में एक अहम नियम यह भी है कि तिजोरी का मुंह कभी दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर न हो, क्योंकि यह धन के आउटफ्लो यानी धन के बहाव का संकेत माना जाता है. इसके अलावा तिजोरी को कमरे के कोने में सटाकर नहीं रखना चाहिए ताकि उसके चारों ओर ऊर्जा का संचार बना रहे. बीम के नीचे तिजोरी रखना भी नकारात्मक माना गया है, क्योंकि ऊपर का भारी दबाव आर्थिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है. कई घरों में देखा गया है कि तिजोरी के ऊपर लोग वस्तुएँ रख देते हैं, जबकि वास्तु इसे गलत मानता है क्योंकि इससे धन की ऊर्जा भारी

सुख-शांति के लिए करे संकष्टी चतुर्थी का व्रत

हिन्दू धर्म में भगवान गणेश को विघ्नहर्ता और प्रथम पूजनीय देवता माना गया है. किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत उनसे ही होती है और उनका आशीर्वाद जीवन की बाधाओं को दूर कर सुख-शांति प्रदान करता है. संकष्टी चतुर्थी उन्हीं की अराधना के लिए समर्पित एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्रत है, जो हर महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है. पौष माह में पड़ने वाली यह संकष्टी चतुर्थी विशेष फलदायी मानी जाती है.

वर्ष 2025 में यह पावन तिथि दिसंबर के दूसरे सप्ताह में पड़ रही है. इस अवसर पर श्रद्धालु व्रत, पूजन और चंद्रोदय दर्शन के माध्यम से अपने जीवन में सकारात्मकता और समृद्धि की कामना करेंगे. आइए पौष महीने की संकष्टी चतुर्थी की सही तिथि, पूजा विधि, शुभ मुहूर्त और महत्व को विस्तार से समझें.

पौष माह की संकष्टी चतुर्थी को विशेष फल देने वाली मानी गई है क्योंकि इस समय से शीत ऋतु का प्रभाव बढ़ता है और धार्मिक दृष्टि से यह काल पुण्यदायक होता है. व्रत का महत्व पुराणों में वर्णित है कि संकष्टी चतुर्थी का व्रत करने से व्यक्ति के जीवन में धन, बुद्धि और स्वास्थ्य की वृद्धि होती है. संतान इच्छा रखने वाले दंपतियों के लिए भी यह व्रत विशेष लाभकारी माना गया है. इस दिन भगवान गणेश की कृपा से— कठिन कार्य सरल बनते हैं

संकष्टी चतुर्थी 2025: सही तिथि और समय पंचांग के अनुसार पौष माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि वर्ष 2025 में 7 दिसंबर को शाम 6:24 बजे आरंभ होगी. यह तिथि अगले दिन 8 दिसंबर को शाम 4:03 बजे समाप्त होगी.

पूजा विधि विस्तार

- ब्राह्ममुहूर्त में उठकर स्नान करें शरीर और मन को शुद्ध करके व्रत का संकल्प लें. स्वच्छ और धुले हुए कपड़े पहनें लाल रंग के वस्त्र को गणेश पूजा में विशेष शुभ माना जाता है.
- गणेश जी की मूर्ति या चित्र को साफ स्थान पर स्थापित करें.
- फूलों और दीप से सजाकर एक पवित्र वातावरण बनाएं. रोली, अक्षत, फूल और जल अर्पित करें.
- भगवान गणेश को सिंदूर चढ़ाना भी अत्यंत शुभ माना गया है.
- मोडक और तिल के लड्डू का भोग लगाए माना जाता है कि यह गणेश जी का प्रिय भोग है और प्रसन्नता का प्रतीक है.
- संकष्टी व्रत कथा का पाठ करें कथा सुनने या पढ़ने से व्रत पूर्ण और फलदायी माना जाता है. चंद्रोदय से पहले आरती करें

सूर्योदय के बाद और दोपहर में सोना क्यों माना जाता है अशुभ?

भारत में शास्त्रों और ज्योतिष मान्यताओं का प्रभाव आज भी जीवनशैली, दिनचर्या और आदतों पर गहराई से देखा जा सकता है. इन्हीं मान्यताओं में से एक है—सोने-जागने के शुभ और अशुभ समय का महत्व, जिस पर सोशल मीडिया और हेल्थ कम्युनिटी में एक बार फिर चर्चा तेज हो रही है.

पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार, सूर्योदय के बाद देर तक सोना न सिर्फ अशुभ माना गया है बल्कि यह व्यक्ति के स्वास्थ्य, धन, मानसिक ऊर्जा और जीवन के अनुशासन पर नकारात्मक असर डालता है. शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि जो लोग सूर्योदय के बाद भी सोते रहते हैं, उनसे देवी महालक्ष्मी रूठ जाती हैं क्योंकि यह समय परिश्रम, ऊर्जा और नए दिन की शुरुआत का प्रतीक माना गया है. सुबह की पहली किरण को ब्रह्ममुहूर्त का विस्तार माना जाता है और इस समय जागना शरीर, मन और विचारों की शुद्धि का माध्यम समझा गया है. पारंपरिक मान्यता कहती है कि जो लोग आलस्यवश सुबह देर तक सोते रहते हैं, वे धीरे-धीरे मानसिक तनाव की गिरफ्त में आने लगते हैं, उनका आत्मविश्वास घटता है और उनमें निर्णय क्षमता कमजोर होती है.

माना जाता है कि ऐसे लोगों की आर्थिक स्थिति भी अस्थिर रहती है, क्योंकि लक्ष्मी की कृपा बिना परिश्रम और अनुशासन के प्राप्त नहीं होती. वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो सूर्योदय के बाद सोना स्लीप-साइकिल को बिगाड़ देता है, जिसके चलते शरीर की जैविक घड़ी असंतुलित हो जाती है और इससे ऊर्जा में कमी, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन और मोटापा बढ़ने जैसी समस्याएँ सामने आ सकती हैं. विशेषज्ञों के अनुसार, सुबह की धूप शरीर में विटामिन ष्ठ का प्राकृतिक स्रोत है और सूरज की रोशनी से मेलाटोनिन का स्तर नियंत्रित होता है, जिससे पूरे दिन की एकाग्रता और मानसिक स्थिरता बनी रहती है. इसी तरह परंपराओं में दोपहर में सोना भी अशुभ माना गया है. शास्त्रों के अनुसार, यह समय कर्म, काम और जिम्मेदारियों को पूरा करने का समय है, न कि विश्राम का. माना जाता है कि दोपहर में सोने से व्यक्ति के भीतर आलस्य बढ़ता है, जीवन में ठहराव आता है और ऊर्जा की प्राकृतिक गति बाधित होती है. मानसिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर यह समय सक्रियता का समय माना गया है.

चींटियों की चाल से भविष्य का अंदाजा?

लोकमान्यताओं में काली-सफेद चींटियों की अहमियत

घरों में दिखने वाली चींटियों को लेकर लोकधारणाएँ आज भी काफी प्रचलित हैं. खासकर काली और सफेद चींटियों को लोग शुभ-अशुभ संकेतों से जोड़कर देखते रहे हैं. भारत में कई परिवार आज भी चींटियों की गतिविधियों को संकेत के रूप में देखते हैं. लोक मान्यताओं के अनुसार, काली चींटियाँ घर में धन आगमन का संकेत मानी जाती हैं.

खासकर यदि वे मंदिर या पूजा स्थल

के आसपास दिखें, तो इसे सकारात्मक माना जाता है. इसके उलट, सफेद चींटियाँ यानी टर्माइट्स को हानिकारक माना जाता है. लोक विश्वास कहता है कि इनका प्रकट होना आर्थिक हानि, घर की सेहत को खतरा और नकारात्मक बदलाव का संकेत हो सकता है.

भौतिक रूप से भी टर्माइट्स घर की लकड़ी और सामान को नुकसान पहुंचाते हैं, इसलिए इनसे सतर्क रहना ज़रूरी है. विशेषज्ञ कहते हैं कि पारंपरिक मान्यताओं को मानना गलत नहीं, लेकिन घर में सफेद चींटियों के दिखते ही तुरंत पेस्ट कंट्रोल कराना आवश्यक है. वहीं काली चींटियों की संख्या बढ़ने पर भी घर की साफ-सफाई और किचन के प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिए.

लोक मान्यताओं की अपनी अहमियत है, पर विशेषज्ञ मानते हैं कि इनका असर व्यक्ति की सोच पर ज्यादा होता है. पॉजिटिव संकेत से आत्मविश्वास बढ़ता है तो नेगेटिव संकेत चिंता भी बढ़ा सकते हैं, इसलिए संतुलित दृष्टिकोण अपनाना बेहतर है.